REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

उदयप्रकाश की कहानियों में समकालीनता।

Dr. T. Sreedevi
Assistant Professor, Department of Hindi, M.G. College,
Thiruvananthapuram, Kerala.

समाज के बारे में चिन्तित संवेदनशील, प्रयोगशील, प्रतिश्ठित उदय प्रकाशजी हिन्दी ही नहीं विश्व पर वलिख्यात लेखक है। वे एक कवि, कहानीकार, पटकथाकार, पत्रकार आदि रूप में भी प्रशस्त है। लेखकीय जीवन में प्रवेश एक कवि के रूप में हुई। कविता के साथ-साथ कहानी भी लिखना शुरु किया।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह निर्विवाद सत्य है। इस सत्य हमें उदयप्रकाश जी की रचनाओं में मिलता है। उदय जी अपनी कहानियों द्वारा आधुनिक युग की आम जनता के दु:ख और पीडा की मार्मिक अभिव्यक्ती की है। एक ओर हमारे समाज में इंटरनेट, मोबइल, लॉपटॉप, ग्लोब और मल्टीनाशनल मेट्रो, भोगों-भोगों संस्कृती से समृध्द थी। दूसरी ओर परंपरागत मूल्यों की दारुण वापसी है। उदयजी की कहानियाँ इन्हीं विषम परिस्थितियों से उपजी है। वह उत्तराधुनिक हिन्दी कहानी की नई प्रवणता के प्रतिष्ठापक है।

समकालीनता एक दृष्टिकोण है। समय की सच को तटस्थता के साथ परखने की क्षमता किसी को समकालीन बनाती हैं। 'समकालीनता' वर्तमान जीवन प्रणाली की जटिलता को उसकी पूरी समग्रता में सूक्ष्मता के साथ व्याख्यायित, परिमार्जित एवं प्रतिक्रियान्वित करनेवाली गहरी समझ का नाम है।

उदय प्रकाश जी की कहानियाँ अपने समय की समस्याओं और चुनौतियों के साथ संघर्ष करते हुए अपने सामाजिक सरोकाट को प्रामाणित करते हैं। इन कहानियों अपने समय के यथार्थ का अनावरण करता है। मानव विरोधी यथार्थ के खिलाफ प्रतिरोध जाहिर करता है।

नेलकटर, डिबिया, अपराध आदि तीन कहानियों उदय प्रकाशजी का निजी जीवन से है। ये कहानियाँ बहुत छोटी है। ये तीनों कहानियाँ लेखक के अतीत की स्मृतियों है, जिन्हें लिखकर वह किसी भारी दु:ख के दबाव से मुक्त होना चाहता है। उदय प्रकाशजी कहता है कि " नेलकटर में माँ से उड़े एक करुण बच्चे के करुणा दया है जो नेलकटर के बहाने अपनी माँ को ढूँढता है। 'डिबिया' एक ऐसी कहानी हे जो सम्बन्धों की डिबिया की कहानी है। 'अपराध' कहानी में छुटपन के ऐसे बडे भाई से रिश्ते की कहानी है, जिनका एक पैर पोलियोग्रस्त है।" कहानी का नायक खेल में पिता से झूठ बयान दर्ज करता है। इस झुट की असर, बडे भाई पर पडता है। बडे भाई को पिता बुरे तरह पीटते हैं। लेखक का माँ -बाप अब दुनिया में नहीं है, नायक की निगाह में वह सच आज भी नहीं कहा जा सकता। सच ना कह सकने कारण अपराध बोध से भर जाता है।

उदय प्रकाशजी अधिकतर कहानियों मेंलंबी कहानियाँ चर्चा में रही है। उनकी छोटी कहानियाँ भी महत्वपूर्ण है। डिबिया, सहायक, अभिनय, नेलकटर, नौकरी आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण है। उदयजी कहानियाँ में हम यथार्थ की जादुई हम देख सकते हैं। इसका एक उदारहण है 'डिबिया'। 'सहायक' कहानी में हम उदय जी कहता है कि, "यह तब की बात है जब हिन्दी के कवि और अन्य साहित्यकार गावों के लोगों के बीच भी उपरिचित नहीं थे" इस पंक्ति द्वारा वह एक बड़ा सत्य को कहता है। आज चौथे-पाँचवी में पढते बच्चों दाद-दादी या नाना-नानी से अलग रहते हैं। अब बच्चों को रामायण और महाभारत के बारे में कोई जानकारी नहीं है। लेखक कहता है कि "जानते है तो हनुमान या गणेश जैसी एनिमोंटिंड़ फिल्मों के माध्यम से

अब कौन जानना चाहता है धर्मयुग के संपादक धर्मवीर भारती और उनके नाटक अंधा युग के बारे में''।[1]

समय मूल्यों की ही नहीं बल्कि उन्हें निर्धारित करनेवाले नायकों की छवि भी बदल देता है। इसी सच को उदय प्रकाश जी अपने कहानी 'सहायक' के माध्यम से प्रस्तुत किया। वह इस कहानी के द्वारा हम से यह पूछता है कि क्या हम आज का समाज अपने समय के साहित्यकारों से परिचित हैं। एक ओर सवाल भी उदयजी पूछता है कि हमारे समाज में विस्वार्थ सेवा करने केलिए अपनी सीमाओं के भीतर जो व्यक्ति तत्पर है उसकी भावनाओं का मूल्य समाज में क्या है? जहाँ से स्वार्थ सह सके ऐसा व्यक्ति समाज केलिए अधिक महत्वपूरण हो जाता है वनिस्बत एक नेक-नियत व्यक्ति के।

हमारे संस्थान और विश्वविद्यालय किस तरह से चुटकारों को तीं करके आनेवाली पीढियों का भविष्य अंधकारमय बना रहता है इस प्रश्न को प्रकाशजी अपनी कहानी 'नौकरी' में प्रस्तुत किया है। इस कड़वे सच को सामने लाती है। अपवाद हर जगह में हैं। उदय प्रकाश की कहानियाँ ऐसे ही अपनी भूमिका का निर्वाह करती है। उदय प्रकाशजी कि लंबी कहानियाँ कितना गहरा प्रभाव-छोडती निर्वाह करती है। उदय प्रकाश जी की लंबी कहानियाँ कितना गहरा प्रभाव छोडती है जितने की प्रभाव छोटी कहानियाँ भी पाठक पर प्रभाव छोड़ती है यह बात कविले-गौर है। उदय प्रकाशजी के पत्नी के अनुसार उदय जी लंबी कहानियाँ पढने केलिए खूब थैर्य की ज़रूरत है। उनको आपके छोटी कहानियाँ नेलकटर, डिबिया, अपराध आदि खासतौर पर पसंद है। उसका मत है ''परिवार के स्वजनों से जुडी इन कहानियाँ के सभी पात्रों को पहचानने का प्रयास करती हूँ, क्योंकि इनकी इस तरह कि परिवार जुडी कहानियाँ सच्ची घटनाओं और जीवन के सच्चे चरित्रों पर आधारित है। इन कहानीयों को पढते हुए मुझे उन घटनाओं और चरित्रों के साथ तारतम्य बनाना अच्छा लगता है। इनकी रचनाओं का फलक बहुत बडा है, ...विविध रंग-रूप के चरित्र-पात्र इनकी कहानियों में मौजूद है, कविताओं में मौजूद है। कहानियों में माँ, पिता, भाई, बहन सारे रिश्तों के शोड्स हैं।''[2]

उत्तराधुनिक भूमंजलीकृत विकल मानसिकता और उनके विरोध आदि उदय प्रकाशजी की अधिकांश कहानियों का मुख्य प्रतिपाध विषय है। भूमंटलीकृत अमानवीय के आवां पाक्कर निकली गयी पहली कहानियों में एक है। ''वसुथैव कुटुम्बकम और अतिथि देवो भव के आदर्शों से पुलकित आर्ष भारत में एक अपरिचित बुजुर्ग पर वर्तमान भूमंडलीकरण भारतीय कुटुम्बकम के अमानविय व्यवहार की दिलचोड़ कहानी है तिरिछ।'' तिरिथ से काटे हुए और होश उडते हुए आनेवाले उस बुजुर्गों को बडे-बडे लोग निष्करुण बाहर निकाल देते हैं। वह भारतीय पाक्किस्तानी जासूस-सा लग रहने के कारण बाहर उसका स्वागत पत्थर-मार से हो रहा था। वह प्राण रक्षा केलिए तड़प रहा था, उसके चेहरे पर ईंट के टुकडे फेंके जा रहे थे। 'अतीथि सेवा' केलिए प्रतिष्ठित देश में बेचारे स्वगदेशी पर पत्थर फेंके जा रहे थे। अतीथि सेवा केलिए प्रतिष्टित देश में बेचारे स्वदेशी पर पत्थर सेवा और उस जघन्य दृश्य को निसंग देखनेवाले बुध्दीजीवि उत्तराधुनिक मनोवृततियों मानवीय संवेदनाओं को जड़ बना दिया। आज खूनी दृष्य सुखग मनोरंजक है। उस बूढे पर फेंक गये पत्थर के टुकजे हमाने परंपरागत मूल्यों एवं संस्कृति पर फेंके गये पत्थर के टुकडे है, मरा हुआ बूढ़ा मरे हुए अतीत संस्कार।

उदयजी की कहानियाँ वर्तमान मय का, उत्राधुनिक कालखंड का आभिलेख है। भारतिय परिवेश के गत तीस वर्षों की गति विगतियाँ अबिलिखित है। उनकी कहानियाँ को किसी एक विशेष शीर्षक के अंतर्गत समेजा नहीं जा सकता। कहानी की अंतश्चेतना और बाह्य स्वरूप अलग-अलग है। उन्होंने कहानियों के बारे में कहा था कि ''कथा अपने समय को भाषा में लिखने का आख्यान है। इट ईज़ रिटेर्लींग आंफ बन्स टाइम। अपने काल का पुनराख्यान।'' विशेय वैविध्य हार्दिकसंवेदनाएँ, बौद्धिक तार्किकताएँ, आदी भावप्रवणताएँ आदि आश्चर्य है। उत्तराधुनिक संस्कृती विकल मनोवृत्तियों, भूमंडलीकरण प्रदत्त औपनीवेशिक संस्कार की छाया छवियों, एकांगी खतरनाक भूमंड़लीकृत विकास, उपभोक्ता सस्कार जन्म उत्तराधुनिक मृत सवेदना, नृशंस पुलिस व्यवस्था, मूल्यभ्रष्ट न्याय व्यवस्था, राजनीति, धर्म एवं गुड़गदों का शक्तिशाली गठबंधन शिक्षा जगत में व्याप्त पाद-सेवा, जातीयता, कामुकता आदि वर्तमान यथार्थ से स्पंदित है। उदय जी उत्तराधुनिक प्रयोग धर्मी कथा-शिल्पी है। उनके नाम के बिना उनकी कहानियों छाप आती है तो यह उदय-कहानी समझने में कोई दिक्कत नहीं पडेगी। क्योंकि उदय प्रकाश की कहानियों में उदयामुद्रा अंकित है। उदय जी की कहानियों में किस्सागोई के नवीन शिल्प सौन्दर्य है। वे हिन्दी कहानी में जादूई यथार्थवादी (Magic realism) के प्रवतक है। किसी असंभव्य जादू के माध्यम से संभव्य यथार्थ की अभिव्यक्ति जादूई यथार्थ का मर्म है।

छोटी-छोटी घटनाओं से कहानी बना देता आसान नहीं होता। गल्प, रहस्य और फंतासी का मिला-जूला रूप कल्पना के सहारे प्रस्तुत करना तो सहज है, एसा बहुत से ग्राम्य जीवन से जुडे लोग या गप्पे मारने वाले व्यक्ति आसनी से करते है। यह कठिन काम है कि जीवन का आत्मिक यथार्थ एक पुरी कहानी के रूप में प्रस्तुत करना। यह कठिन काम उदय जी आसानी से कर लेते है।

1. शीतलवाणी, हमारा समय और उदय प्रकाश - डॉ. निरंजन देव शर्मा पृ.सं. 26
2. अपनी-उनकी बान, कथा अपने समय को भाषा में लिखन का अखियान - उदयप्रकाश, पृ.सं. 101.